

23

वर्ष : 2019-20

ISSN : 0976-5778

ईसुरी

बुन्देलखण्ड के आधुनिक साहित्यकारों पर केन्द्रित



विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा नामित शोध पत्रिका- संख्या : 48672

ईसुरी-23

(पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका)

वर्ष - 2020 ISSN : 0976-5778

प्रधान संपादक

चन्दा बेन

संपादक

राजेन्द्र यादव

(सचिव बुन्देली पीठ)

प्रबंध संपादक

आशुतोष कुमार मिश्र



प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर (म.प्र.)

अनुक्रम

प्रधान संपादक की कलम से...

- प्रो. चन्दा बेन 3

संपादकीय

- डॉ. राजेन्द्र यादव 5

बुन्देलखण्ड : कृति केन्द्रित मूल्यांकन

- | | | |
|--|----------------------------------|----|
| 1. बुन्देली का सांस्कृतिक नाट्य उत्कर्ष
(संदर्भ लोकनाथ सिलाकारी का राजा हरदौल बुन्देला) | - प्रो. राजमति दिवाकर | 9 |
| 2. बुन्देली का रामभक्ति काव्य
(संदर्भ भगवानदीन मिश्र का राजेन्द्र विलास महाकाव्य) | - प्रो. सुरेश आचार्य | 12 |
| 3. बुन्देलखण्ड के रससिक्त अध्येता
(संदर्भ हरिविष्णु अवस्थी का बुन्देलखण्ड
की पारम्परिक जल संरचनाएं) | - प्रो. चन्दा बेन | 14 |
| 4. बुन्देलखण्ड की समृद्ध परंपरा : प्रबोध महाकाव्य
(संदर्भ जगदीश कुमार कुशवाहा) | - प्रो. सरोज गुप्ता | 18 |
| 5. बुन्देली भाषा का रसात्मक महाकाव्य
(संदर्भ मायूस सागरी का ब्रजरज) | - प्रो. चन्दा बेन एवं सुधीर साहू | 20 |
| 6. सद्यः सीरोत्कर्षण सुरभिः : बुन्देली के ललित निबंध
(संदर्भ पद्मश्री कैलाश मड़बैया के निबन्ध) | - डॉ. आशुतोष | 24 |
| 7. बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्तिकोष
(संदर्भ आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल) | - डॉ. अफरोज बेगम | 32 |
| 8. बुन्देली लोक का काव्यात्मक उछाह : ईसुरी
(संदर्भ दया दीक्षित का फाग लोक के ईसुरी) | - डॉ. सुजाता मिश्र | 36 |
| 9. बुन्देली लोक संस्कृति का सृजनात्मक वैभव
(संदर्भ मोतीलाल चौरसिया : बुन्देली लोकगीतों
के सांस्कृतिक अध्ययन) | - रतिराम अहिरवार | 40 |

बुन्देलखण्ड : कृतिकार केन्द्रित मूल्यांकन

- | | | |
|--|------------------------------|----|
| 10. सागर जिले का साहित्यिक वैभव | - वृन्दावन राय 'सरल' | 45 |
| 11. अम्बिका प्रसाद दिव्य की काव्य-साधना | - प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी | 49 |
| 12. लोकजीवन के चितरे कवि : अवधकिशोर जड़िया | - प्रो. बहादुर सिंह परमार | 59 |
| 13. जयन्ति ते सुकृतिनो | - टीकाराम त्रिपाठी | 66 |

अम्बिका प्रसाद दिव्य की काव्य-साधना

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी*

बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक में बुंदेलखण्ड अंचल के सामन्ती जीवन एवं रीतिकालीन साहित्यिक परिवेश में खड़ी बोली कविता की प्रतिष्ठा के लिए जिन साहित्यकारों ने संघर्ष किया, उनमें अम्बिका प्रसाद दिव्य की रचनाधर्मिता का स्मरणीय योगदान है कविता दिव्य जी की प्रिय विधा है। कविता की दर्जन भर पुस्तकें रचकर उन्होंने अपनी काव्य-प्रतिभा का परिचय दिया है। कविता में भी वे मूलतः गीतकार हैं। गीतों में रमना उन्हें अच्छा लगा है। कविता लिखने की शुरूआत दोहे से होती है।

चौथे दशक के पूर्वार्द्ध में लखनऊ से प्रकाशित 'माधुरी' नामक मासिक पत्र में चित्रांकन का अवसर मिला और उन्होंने चित्र के नीचे एक दोहा रचा, "पियत कहाँ डारत वहाँ, घर सों जीवन धार। प्यास लगी हरि है तुम्हें सींचत हियो हमार।।" यहीं से कविता के प्रति रुचि जागी और 'दिव्य दोहावली' की रचना संभव हुई। इसकी प्रेरणा उन्हें दुलारे लास भार्गव कृत 'दुलारे दोहावली' से मिली। सन् 1936 में दिव्य दोहावली प्रकाशित होती है और तब से लेकर 1986 (दिव्य जी की अवसान तिथि) पूरे पाँच दशक तक उनकी काव्य यात्रा होती है। इस कालखण्ड में उपन्यास, नाटक, निबंध, चित्रकला के साथ ही कविता की डगर पर वे अनवरत चलते रहे। हिन्दी काव्यान्दोलनों, नई

विचारधाराओं, पश्चिमी साहित्य चिंतन, बदलते सामाजिक संदर्भ, जीवन के यथार्थ, राजनीतिक-सांस्कृतिक परिदृश्य, घटनाओं आदि के साथ कविता की वस्तु और शिल्प के बदलते तेवर, बिम्ब प्रतीक, भाषा आदि का प्रभाव उनकी कविताओं पर प्रायः कम ही पड़ा है। हिन्दी कविता का स्वभाव बदलता रहा पर दिव्य जी छायावादी भाव-प्रभाव में अपने ही रंग-ढंग की कविता में कल्पना का लोक रचते रहे, अच्छे समाज के लिए सपने सहेजते रहे। मन की व्यथा-कथा भी कहते रहे। अपने परिवेश एवं जीवनानुभव के दायरे में मनोनुकूल एवं भावुकता के साथ उन्होंने अच्छा रचा, श्रेष्ठ और प्रेरणादायी भी।

दिव्य जी के प्रिय कवियों में रवीन्द्रनाथ टैगोर और जयशंकर प्रसाद प्रमुख थे। हिन्दी की ऐतिहासिक उपन्यास-धारा में तो उन्हें उचित स्थान मिला, पर कविता के क्षेत्र में उन्हें अभी समुचित महत्व नहीं मिला। उनकी कविता की परख की जानी चाहिए। दिव्य जी की कविताएँ एक भावुक, संवेदनशील, ईमानदार एवं उदात्त चेता मनुष्य की कविताएँ हैं। वह बेहद चिंतनशील रचनाकार हैं बाहरी दुनिया की अपेक्षा भीतरी दुनिया में उनका मन अधिक रमता है। वह कल्पना की उड़ान भरता है, पर कहीं न कहीं जिंदगी को समझने और संवारने की चिंता है उसे।

*प्रोफेसर, हिन्दी विभाग एवं अध्यक्ष संस्कृत विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) मोबाइल : 7974337103